आलस्य और अलबेलापन - 17

अव्यक्त बापदादा :- (03.02.1974)

➳ _ ➳ जैसे समय की समीपता दिखाई देती है क्या वैसे ही अपनी स्थिति की समीपता व समानता दिखाई देती है? जैसे दुनिया के लोग आपके सुनाये हुए समय प्रमाण दो वर्ष का इन्तजार कर रहे हैं, क्या ऐसे भी आप स्थापना के और विनाश का कार्य कराने वाले दो वर्ष के अन्दर अपने कार्य को और अपनी स्टेज व स्थिति को सम्पन्न बनाने के इन्तजाम में लगे हुए हो? या इन्तजाम करने वाले अलबेले और इन्तजार करने वाले तेज हैं, आप क्या समझते हो? क्या इन्तजाम जोर-शोर से कर रहे हो या जैसे दुनियावी लोग कहते हैं, कि जो होगा सो देखा जावेगा, ऐसे ही आप इन्तजाम करने के निमित बनी हुई आत्माएँ भी, यह तो नहीं सोचती हो, कि जो होगा सो देखा जावेगा? इसको ही अलबेलापन कहा जाता है।

➳ _ ➳ अब तो इतना बड़ा कार्य करने के लिए खूब तैयारी चाहिए, पता है कि क्या तैयारी चाहिए? क्या शंकर को कार्य कराना है? उसको ही तो नहीं देखते हो कि कब शंकर विनाश करावेंगे? विनाश ज्वाला प्रज्जवलित कब और कैसे हुई? कौन निमित बना? क्या शंकर निमित बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित बने? जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-साथ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्जवलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-साथ है न? तो जो प्रज्जवलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को?

➳ _ ➳ शंकर समान ज्वालारुप बन कर प्रज्जवलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। जब कोई एक अर्थी को भी जलाते हैं तो जलाने के बाद बीच-बीच में अग्नि को तेज किया जाता है, तो यह विनाश ज्वाला कितनी बड़ी अग्नि है। इनको भी सम्पन्न करने के लिए निमित बनी हुई आत्माओं को तेज करने के लिए हिलाना पड़े-कैसे हिलावें? हाथ से व लाठी से? संकल्प से इस विनाश ज्वाला को तेज करना पड़े, क्या ऐसा ज्वाला रुप बन, विनाश ज्वाला को तेज करने का संकल्प इमर्ज होता है या यह अपना कार्य नहीं समझते हो?

➢➢ समय की समीपता की निशानियाँ

➳ _ ➳ कलियुग के अंत की निशानियाँ

→ अकाले मृत्यु

→ **उनके लिए यही स्वर्ग है, माया ने सभी को भ्रमित कर रखा है**

→ **जवानी में ही बुढ़ापे के सारे लक्षण**

→ चारों तरफ अशांति, हिंसा, नैतिकता का पतन

→ चारों तरफ ईर्ष्या, वैर भावना, वैमनस्य

→ अनाज नहीं मिलेगा

→ वृक्ष पर फल नहीं लगेंगे

→ स्त्री-पुरुष अधर्मी बन जायेंगे

→ स्त्री पतिव्रता धर्म छोड़ देगी, पुरुष भी

→ चारों तरफ अराजकता, अनैतिकता होगी

→ प्राकृतिक आपदाएं तेजी से आएँगी

→ चारों तरफ काम विकार होगा

→ **धरती की शक्ति ख़त्म हो जाएगी**

→ वातावरण में अपवित्रता होगी

→ भूत-प्रेत का बाहुल्य

→ धन, वैभव, संपत्ति समाप्त हो जाएगा, चारों और निर्धनता

→ लोग भक्ति करना छोड़ देंगे

→ **Wholsale मौत होगा**

→ दुःख के पहाड़ गिरेंगे

→ चारों तरफ असुरक्षा का वातावरण होगा, भयभीत होगा

→ बड़ी-बड़ी बीमारियाँ आएँगी, जिनका कोई इलाज नहीं होगा

→ पांचों तत्व दूषित हो जायेंगे

→ तीसरा विश्व युद्ध होगा

→ भाई-भाई का खून करेगा

→ **सारा विश्व Mental Hospital बन जायेगा**

➳ _ ➳ स्थिति की समीपता व समानता

→ श्रेष्ठ स्थिति

→ महान स्थिति

→ **अव्यक्त स्थिति**

→ फ़रिश्ता स्थिति

→ साक्षी स्थिति

→ **ब्रह्मा बाप समान स्थिति**

→ **साकारी, आकारी, निराकारी स्थिति**

→ अशरीरी अवस्था

➳ _ ➳ हम इंतजाम करने वाले हैं

→ **<u>जो होगा सो देखा जावेगा, इसको ही अलबेलापन कहा जाता है</u>**

→ क्या होगा तो देखा जावेगा -

- **ड्रामा में जो होगा देख लेंगे**
- जो हलचल होगी देख लेंगे
- प्राकृतिक आपदाएं आएँगी, बाबा ने कहा तुम भूखे नहीं मरोगे देख लेंगे
- बाबा ने कहा दाल-रोटी मिलेगी
- जो हिसाब-किताब आयेगा देख लेंगे
- जो भाग्य होगा देख लेंगे

- जो पद मिलना है वही मिलेगा, पुरुषार्थ करो ना करो
- विकर्म विनाश तपस्या से लास्ट में ख़त्म हो जायेगा
  - **कराने वाला वो है हमें अंहकार नहीं करना है**

➢➢ विनाश ज्वाला प्रज्जवलित कब और कैसे हुई

➳ _ ➳ शंकर निमित्त बना?

→ **शंकर हमारा ही तपस्वी स्वरूप है**

→ ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है

➳ _ ➳ यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने

→ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला प्रगट हुई

→ **बाबा ने कहा- 'जब तुम Disturbance free हो जाओगे तब Distruction होगा**

- हमारी सम्पूर्ण स्टेज का प्रतीक

➳ _ ➳ प्रज्जवलित की हुई विनाश की ज्वाला को हमें सम्पन्न करना है

→ जब अर्थी को जलाते हैं तो बीक-बीच में अग्नि को तेज करते हैं

→ विनाश ज्वाला कितनी बड़ी अग्नि है

→ इसको भी सम्पन्न करने के लिए निमित्त बनी आत्माओं को तेज करने के लिए हिलाना पड़े

→ हाथ से व लाठी से?

→ **संकल्प से इस विनाश ज्वाला को तेज करना पड़े**

- **हमारे संकल्प श्रेष्ठ, ऊँचे, सम्पूर्णता के समीप हो तो समय को समीप ला सकते हैं**

अव्यक्त बापदादा :- (18.06.1974)

➳ _ ➳ वर्तमान समय मैजारिटी में जो विशेष दो कमजोरियाँ दिखाई दे रही हैं, उसकी समाप्ति वा उन दो कमजोरियों में सफ़लतामूर्त तब बनेंगे, जब इस बात को सफल बनावेंगे। वह दो कमजोरियाँ हैं-आलस्य और अलबेलापन। इसको मिटाने का साधन चेकर बनना है। 99 पुरुषार्थियों में किसी न किसी रुप में आलस्य और अलबेलापन कहीं अंश रुप में है और कहीं वंश रुप में है। महारथियों में अंश रुप कौन-सा है? घोड़ेसवार में वंश रुप कौन-सा है? क्या उसको जानते हो? अंश रुप है कि मेरी नेचर व मेरे संस्कार। मेरी भावना नहीं है, लेकिन बोल व नैन चैन हैं, रेखायें हैं, लेकिन रुप बने हुए नहीं हैं-यह है अंश-मात्रा सम्पूर्ण विजयी बनने में अलबेलापन अथवा रॉयल रुप का आलस्य बाधक है।

➳ _ ➳ घोड़ेसवार वा सेकेण्ड डिवीजन में पास होने वाली आत्माओं में वंश रुप में किस रुप में हैं? उनका रुप हैं, हर बात में, यह बोल उन्हों का ट्रेडमार्क है, हर बात में कॉमन शब्द हैं। अलबेले और आलस्यपन के शब्द कौन-से हैं? वह सदैव अपने को सेफ रखने की प्वाइन्ट्स देने में वा बातें बनाने में बड़े प्रवीण होते हैं। स्वयं को निर्दोष और दूसरों पर दोष रखने में फुर्त होते हैं। लायर्स होते हैं। लेकिन लॉफुल नहीं होते। जैसे लायर्स झूठे केस को सच्चा सिद्ध कर निर्दोषी को दोषी बना देते हैं। वैसे ही सेकेण्ड डिवीजन वाले कभी भी अपने दोष को जानते

हुए भी, स्वयं को दोषी प्रसिद्ध नहीं करेंगे। ऐसे की ट्रेडमार्क बोल सदैव यह निकलेंगे कि मैंने यह किया क्या? मैंने यह बोला क्या? मेरे मन में तो कुछ था ही नहीं? निकल गया, तो फिर क्या हुआ? हो गया, तो फिर क्या हुआ? 'ठीक कर ढूंगा। फिर क्या की ट्रेडमार्क के बोल होंगे।

➳ _ ➳ जैसे सृष्टि-चक्र के समझाने में फिर क्या, फिर-क्या कहते सारी स्टोरी बतला देते हो ना? सतयुग के बाद फिर क्या हुआ, त्रेता आया, फिर-क्या हुआ, द्वापर आया. फिर क्या शब्द में सारे चक्र की कहानी सुनाते हो। वैसे वह लायर्स आत्मायें फिर-क्या शब्द के आधार पर दूसरों के ऊपर सारा चक्र चला देती हैं, स्वयं को साक्षी बना देते हैं वा न्यारा बना देते हैं वा छुड़ा देते हैं। फिर-क्या' शब्द से अर्थात् इस एक संकल्प से अलबेलेपन व रॉयल-आलस्य का वंश अन्दर ही अन्दर बढ़ता जाता है और ऐसी आत्मा को पॉवरफुल बनाने के बजाय निर्बल बनाते जाते हैं। यह है सेकेण्ड डिवीजन अर्थात् घोड़ेसवार आत्माओं के अन्दर अलबेलापन और आलस्य वंश-रुप में,

➳ _ ➳ इस अंश वा वंश को समाप्त करने के लिये, चैकर बनना अति आवश्यक है। 8 दिन में, एक दिन चैकर बनते हो, 7 दिन अलबेले रहते हो, तो संस्कार 7 दिन के बनेंगे वा एक दिन के? इसलिए अलर्ट बनने के बजाय इजी और लेज़ी बनते हो। ऐसे की रिजल्ट क्या होगी? क्या ऐसे विश्व कल्याणकारी, सर्व-शक्तियों के महादानी वरदानी बन सकते हैं? इसलिए अब इन दो बातों को अंश-रुप में वा वंश-रुप में, जिस रुप में भी है, उसको अभी से मिटावेंगे, तब ही बहुत समय विजयी बनने के संस्कारों के अनुसार विजय माला के मणके बन सकेंगे।

➢➢ **वर्तमान समय दो कमजोरियाँ हैं- आलस्य और अलबेलापन**

➳ _ ➳ महारथियों में अंश रुप में है

→ **मेरी नेचर व मेरे संस्कार**

→ मेरी भावना नहीं है

→ लेकिन बोल व नैन चैन हैं, रेखायें हैं,

→ लेकिन रुप बने हुए नहीं हैं

■ **सम्पूर्ण विजयी बनने में अलबेलापन अथवा रॉयल रुप का आलस्य बाधक है**

➳ _ ➳ घोड़ेसवार वा सेकेण्ड डिवीजन में पास होने वाली आत्माओं में वंश रुप में है

→ स्वयं को निर्दोष और दूसरों को दोषी बनाते हैं

→ लायर्स होते हैं, लेकिन लॉफुल नहीं होते

→ अपने दोष को जानते हुए भी, स्वयं को दोषी प्रसिद्ध नहीं करेंगे

➳ _ ➳ चैकर बनना है

→ **कईयों में चेकिंग पॉवर है पर चेंजिंग पॉवर नहीं है**

➳ _ ➳ ज्ञान के संस्कार बनाने के लिए सारी इन्द्रियों को लगाना पड़ेगा

→ मुख से बोलना, सुनना, देखना पड़ेगा

■ स्थूल आँखों से देखना है

■ **मन की आँखों से भी देखना है मुरली को**

- ▶ **उस महावाक्य को आकाश में लिखा हुआ देखना है**
- ▶ अग्नि से लिखा हुआ देखना है
- ▶ **शक्तिशाली महावाक्यों को मानस पटल पर उकेर देना है**

→ Memory Training

- ■ Law of Ridiculous Thinking
  - ▶ **ज्ञान को हट कर बना देना जिससे याद रहे**
  - ▶ जो odd होता है वो याद रहता है
- ■ Law of Association
  - ▶ **एक मुरली से दूसरी मुरली को associate करना**
- ■ Law of Repetition
  - ▶ **बार-बार पढना, रिपीट करना**

→ सुनना

- ■ याद करने के लिए अपनी आवाज में जोर-जोर से पढना

→ सुगंध

- ■ **मुरली की सुगंध भी आनी चाहिए**

→ स्पर्श

- ■ मुरली को स्पर्श भी करना है

→ बोलना

- ■ कोई ना हो तो स्वयं के लिए ही बोलना है

➳ _ ➳ **लम्बे समय के नए संस्कारों का सृजन करना है**

→ ज्ञान के

→ योग के

→ सेवा के